श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 71, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार, 16 अक्टूबर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

बलिया में दिनदहाड़े हत्या के मामले में मुख्यमंत्री योगी सख्त, SDM व CO सहित पुलिसकर्मी निलंबित

बलिया, जेएनएन। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता की दबंगई गुरुवार को एक पंचायत के दौरान सामने नजर आ गई। बैरिया थाना क्षेत्र में दुर्जनपुर में कोटे के दुकान के आवंटन बैठक के दौरान हुई मारपीट में गोली चल गई। जिसमें जयप्रकाश पाल ने दम तोड़ दिया। इस दौरान सीओ तथा एसडीएम भी मौजूद थे।

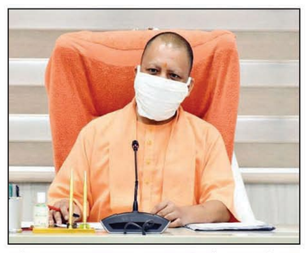

भाजपा नेता धीरेंद्र सिंह पर हत्या का आरोप लगा है। जिस वक्त वहां पर जयप्रकाश पाल को गोली मारी गई उस समय वहां एसडीएम और सीओ भी मौजूद थे। युवक को गोली लगते ही मौके पर भगदड़ मच गई। इसके बाद लोग इधर-उधर भागने लगे। भगदड़ का फायदा उठाकर आरोपी धीरेंद्र सिंह भी मौके से फरार हो गया। पुलिस ने उसके खिलाफ बलिया के रेवती थाने में हत्या का केस दर्ज किया है।

बलिया के इस मामले का तत्काल ही सीएम योगी आदित्यनाथ ने संज्ञान लेते हुए घटनास्थल पर मौजूद एसडीएम, सीओ सहित सभी पुलिसकर्मियों को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर एसडीएम सुरेश कुमार पाल, सीओ चंद्रकेश सिंह के साथ ही घटना के दौरान मौजूद रहे सभी आठ पुलिस कर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। पूरे मामले की जांच डीएम श्रीहरि प्रताप शाही करेंगे। मुख्यमंत्री ने आरोपितों के विरुद्ध भी कठोर कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए हैं।

बलिया के ग्राम सभा दुर्जनपुर और हनुमानगंज की कोटे की दो दुकानों के आवंटन के लिए गुरुवार को पंचायत भवन पर बैठक बुलाई गई। इसमें एसडीएम बैरिया सुरेश पाल, सीओ बैरिया चंद्रकेश सिंह, बीडीओ बैरिया गजेन्द्र प्रताप सिंह के साथ ही रेवती थाने की पुलिस फोर्स मौजूद थी। दुकानों के लिए चार स्वयं सहायता समूहों ने आवेदन किया। इसमें भी वहां दुर्जनपुर की दुकान के लिए आम सहमति नहीं बन सकी। ऐसे में दो समूहों मां सायर जगदंबा स्वयं सहायता समूह और शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह के बीच मतदान कराने का निर्णय लिया गया।वहां मौजूद एसडीएम सुरेश कुमार पाल व सीओ चंद्रद्रकेश सिंह ने कहा कि वोटिंग वही व्यक्ति कर सकता है जिसके पास आधारकार्ड अथवा अन्य पहचान पत्र होगा। वहां मौके पर मौजूद अधिकारियों ने कहा कि जिसके पास आधार कार्ड या अन्य कोई पहचान पत्र होगा वही मतदान करेगा। इसमें एक पक्ष के लोग आधार कार्ड लेकर आए थे लेकिन दूसरे पक्ष के लोग कोई पहचान पत्र लेकर नहीं आए थे। इसी को लेकर हंगामा शुरू हो गया।

हालात बिगड़ते देख एसडीएम के निर्देश पर बीडीओ बैरिया गजेंद्र प्रताप सिंह ने बैठक की कार्रवाई स्थगित कर दी। इसके बाद सभी अधिकारी बैरिया के लिए निकल गए। इस पर एक पक्ष के लोग प्रशासन के विरोध में नारेबाजी करने लगे। देखते ही देखते गाली गलौज, मारपीट और ईंट पत्थर एक- दूसरे पर चलने लगे। विवाद के दौरान चले ईंट पत्थर में चार महिलाएं समेत आधा दर्जन लोग घायल हो गए। दबंगों ने पुलिस के सामने ही फायरिंग शुरू कर दी। इसमें जयप्रकाश पाल को चार गोलियां लगीं और वह जमीन पर गिरकर छटपटाने लगे। उन्हें तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोनबरसा पहुंचाया गया, जहां इलाज के दौरान चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। इस घटना में नरेंद्र सिंह (45), आराधना सिंह (45), आशा सिंह (40), राजेंद्र सिंह (45), अजय सिंह (50) और धर्मेंद्र सिंह (40) गंभीर रूप से घायल हैं।

दुर्जनपुर के 46 वर्षीय जयप्रकाश उर्फ गामा पाल को ताबड़तोड़ चार गोलियां मार दी गईं। जयप्रकाश को गोली चलते ही भगदड़ मच गई। गोली लगने से घायल जयप्रकाश को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। हत्या का आरोप भाजपा नेता धीरेंद्र सिंह पर लगा है। पुलिस अधीक्षक देवेंद्र नाथ दुबे ने घटनास्थल का निरीक्षण कर दोषियों के खिलाफ कठोरतम कार्यवाही करने की बात कही। पुलिस ने मृतक के भाई चंद्रमा पाल की तहरीर पर मुख्य आरोपी धीरेंद्र प्रताप सिंह डब्लू, नरेंद्र प्रताप सिंह, प्रयाग सिंह, प्रभात प्रताप सिंह, यशवंत सिंह, देवेंद्र सिंह, अमरजीत यादव व संतोष यादव सहित 25 अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। घटना के बाद से गांव में तनाव बना हुआ है।

धीरेंद्र सिंह मौके से फरार हो गया। मृत जयप्रकाश के भाई चंद्रमा पाल ने आठ नामजद और 25 अज्ञात लोगों के विरुद्ध थाना में तहरीर दे दी है। एसएचओ प्रवीण कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर सुसंगत धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश तेज कर दी गयी है।

मृतक के भाई ने तहरीर में घटना का मुख्य आरोपी भाजपा कार्यकर्ता धीरेंद्र प्रताप सिंह डब्लू को बनाया है। इस घटना में इनके अलावे नरेंद्र प्रताप सिंह, प्रयाग सिंह, प्रभात प्रताप सिंह, यशवंत प्रताप सिंह, देवेंद्र प्रताप सिंह, अमरजीत यादव और संतोष यादव को नामजद किया है। पुलिस ने बताया कि दूसरे पक्ष के तरफ से कोई तहरीर नहीं मिला है। गांव में व्याप्त तनाव को देखते हुए भारी फोर्स तैनात कर दिया है। बलिया के एसपी देवेंद्र नाथ बताया कि बैठक के दौरान दो गुटों में मारपीट के दौरान यह हत्या हुई है। प्रकरण की जांच जारी है।

अगले महीने आ सकता है चार राफेल विमानों का दूसरा बेड़ा

नई दिल्ली, प्रेट्र। चीन और पाकिस्तान से चल रही तनातनी के बीच भारत के रक्षा क्षेत्र को जल्द और मजबूती मिलेगी। चार राफेल लड़ाकू विमानों का दूसरा बेड़ा अगले चार सप्ताह में भारत पहुंच सकता है। पांच राफेल विमानों का पहला बेड़ा 29 जुलाई को भारत आ चुका है जिन्हें 10 सितंबर को वायु सेना में शामिल कर लिया गया है। अधिकारियों ने कहा कि राफेल विमानों के दूसरे बेड़े को शामिल करने की तैयारियों के तहत भारतीय वायु सेना ने साजो-सामान संबंधी मुद्दों को देखने और वहां सेंट-डिजियर वायुसेना केंद्र पर चुनिंदा पायलटों के प्रशिक्षण की समीक्षा के लिए अधिकारियों के एक दल को फ्रांस भेज दिया है। बता दें कि करीब चार साल पहले भारत ने फ्रांस के साथ 59,000 करोड़ रुपये की लागत से 36 राफेल विमान खरीदने के लिए करार किया था। अधिकारियों ने कहा कि वायु सेना के कई दल जनवरी से अब तक फ्रांस का दौरा कर भारत केंद्रित शस्त्र प्रणालियों को शामिल करने सहित, राफेल परियोजना की प्रगति का जायजा ले चुके हैं। वायु सेना के राफेल परियोजना प्रबंधन दल का एक दफ्तर पेरिस में भी है जिसके प्रमुख ग्रुप कैप्टन रैंक के एक अधिकारी हैं। अधिकारियों ने कहा कि एयर स्टाफ के सहायक प्रमुख (परियोजना) के नेतृत्व में विशेषज्ञों का एक दल इस सप्ताह की शुरूआत में फ्रांस गया है।

गौरतलब है कि राफेल विमानों के पहले बैच को 10 सितंबर को वायु सेना में शामिल किया गया था। वायु सेना प्रमुख आरकेएस भदौरिया ने पांच अक्टूबर को एक कार्यक्रम में कहा था कि 2023 तक सभी 36 विमान वायु सेना में शामिल कर लिए जाएंगे। अभी तक भारत को दस राफेल की आपूर्त्त हो चुकी है। इनमें से पांच विमान वायु सेना के पायलटों को प्रशिक्षण देने के लिए अभी फ्रांस में ही हैं जिन्हें जल्द लाने की तैयारी की जा रही है।

पाकिस्तान से 133 भारतीय नागरिकों की वापसी सुनिश्चित कर रहा है भारत, दिशा-निर्देश जारी

नई दिल्ली, एएनआइ। पाकिस्तान से जल्द 133 लोगों की घर वापसी होने जा रही है। पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग के मुताबिक, 'पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग 19 अक्टूबर को पाकिस्तान से 133 भारतीय नागरिकों की भारत वापसी की सुविधा प्रदान कर रहा है।' बताया गया है कि सूची में शामिल लोगों के लिए दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं। सूची में शामिल लोगों को वापसी के लिए निर्धारित तिथि पर वाघा / अटारी सीमा पर पहुंचने के लिए कहा गया है। सितंबर में, भारतीय उच्चायोग ने कहा था कि वह 363 NORI (भारत लौटने पर आपत्ति) वीजा धारकों और पाकिस्तान से 37 भारतीयों की वापसी की सुविधा दे रहा है।

बता दें कि भारत के हर मामले में पाकिस्तान की अड़चन डालने की रणनीति रही है। वह हर मामले में दखल देते है। हाल ही में भारत ने पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार डॉ. मोइद यूसुफ के दावे पर करारा निशाना साधा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अनुराग श्रीवास्तव ने पाकिस्तानी एनएसए के उस दावे पर भी करारा पलटवार किया जिसमें उन्होंने दावा किया था कि भारत ने पाक के साथ बातचीत की इच्छा जताई थी। श्रीवास्तव ने कहा कि पाकिस्तान अपनी घरेलू नाकामियों को छिपाने के लिए ऐसी बातें कर रहा है। श्रीवास्तव ने कहा कि हमने पाकिस्तान के एक वरिष्ठ अधिकारी के साक्षात्कार की रिपोर्ट देखी हैं। भारत की तरफ से बातचीत के संदर्भ में कोई भी संदेश पाक को नहीं भेजा गया है। पाकिस्तान अपनी घरेलू नाकामियों को छिपाने और जनता को गुमराह करने के लिए ऐसा बयान दे रहा है।

मदरसों में 19 से शुरू होगी पढ़ाई, 50 फीसद रहेगी विद्यार्थियों की उपस्थिति

लखनऊ, जेएनएन। उत्तर प्रदेश सरकार शर्तों के साथ 19 अक्टूबर से मदरसों में पढ़ाई शुरू कराने जा रही है। मदरसों में सेकेंडरी, सीनियर सेकेंडरी, कामिल एवं फाजिल की कक्षाएं दो पालियों में चलेंगी। पहली पाली में सेकेंडरी व फाजिल और दूसरी पाली में सीनियर सेकेंडरी व कामिल की पढ़ाई होगी। प्रत्येक दिन कक्षा में 50 फीसद छात्र ही बुलाए जाएंगे। शेष 50 फीसद अगले दिन बुलाए जाएंगे। अभिभावकों की लिखित सहमति के बाद ही छात्र-छात्राएं मदरसों में पढ़ाई के लिए बुलाए जाएंगे। योगी सरकार ने मदरसों के लिए स्टेंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) जारी कर दिया है। सरकार का आदेश आते ही गुरुवार को मदरसा शिक्षा परिषद के रजिस्ट्रार आरपी सिंह ने भी सभी जिलों को 19 से मदरसे खोलने के निर्देश दे दिए हैं। अल्पसंख्यक कल्याण एवं वक्फ विभाग के विशेष सचिव जेपी सिंह ने गुरुवार को मदरसों को विस्तृत दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने सिंगरौली और सोनभद्र औद्योगिक इकाइयों के तीव्र प्रदूषण जांच के लिए जारी किया नोटिस

नई दिल्ली, एएनआइ। सुप्रीम कोर्ट ने तीव्र प्रदूषण की जांच के लिए एनजीटी के आदेश से संबंधित उद्योगों और अधिकारियों द्वारा अनुपालन की मांग वाली याचिका पर केंद्र औद्योगिक इकाइयों को नोटिस जारी किया है। कोर्ट द्वारा मध्य प्रदेश के सिंगरौली और उत्तर प्रदेश के सोनभद्र स्थित एनटीपीसी का प्रदूषण जांचने को कहा गया है।

न्यायाधीश आर एफ नरीमन, नवीन सिन्हा और के एम जोसेफ की पीठ ने पर्यावरण और वन मंत्रालय, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अन्य से प्रतिक्रिया मांगी। सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसने दावा किया था कि 6 दिसंबर, 2017 के बावजूद राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) के आदेश और न ही उद्योगों और न ही संबंधित अधिकारियों ने क्षेत्र और लोगों में पर्यावरण में सुधार के लिए कोई कदम उठाया है। प्रदूषण के कारण लगातार नुकसान हो रहा है।

याचिका पर वरिष्ठ वकील अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि एनजीटी ने इस मुद्दे पर याचिकाकर्ता को ट्रिब्यूनल द्वारा गठित एक निगरानी समिति से संपर्क करने के लिए कहा।

शीर्ष अदालत के अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे ने 6 दिसंबर के आदेश को लागू करने की मांग करते हुए एनजीटी में याचिका दायर की थी, जिसमें कहा गया था कि समिति का गठन किया गया है, लेकिन इसने क्षेत्र के पर्यावरण को बहाल करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया है।

बता दें कि थर्मल पावर प्लांट ने एनजीटी 2019 के आदेश के खिलाफ तीन प्लांटों पर पर्यावरण मुआवजा क्रमशः 4.16 करोड़ रुपये, 27 लाख और 45.90 लाख रुपये लगाया था। ट्रिब्यूनल ने यह हजार्ना यह देखते हुए लगाया था कि पर्यावरण मानकों के उल्लंघन से रिहंद बांध समेत कई जलाशयों को नुकसान पहुंचा था। सोन, रेणु, बिजुल, कन्हार, गोपद, पंकगन, कठौता कंचन आदि नदियों, जलधारा व नाले बलिया नाला, चटका नाला, कहुवा नाला, टिप्पा झरिया, डोंगिया नाला आदि का पानी तो प्रदूषित हुआ ही है, भूमिगत जल भी प्रदूषित हो चुका है।

इन थर्मल पावर प्लाटों से निकलने वाले रासायनिक कचरे और राख से पानी बुरी तरह से दूषित हो चुका है। इसीलिए उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने प्रदूषण करने वालों की पहचान कर-के उनसे हजार्ना वसूलने का आदेश दिया था। एनजीटी ने सिंगरौली प्लांट के खिलाफ यह आदेश एक कमेटी की जांच रिपोर्ट के बाद दिया था।

सुप्रीम कोर्ट ने टीआरपी हेराफेरी मामले में रिपब्लिक मीडिया समूह से कहा, बॉम्बे हाईकोर्ट में दाखिल करें याचिका

नई दिल्ली, पीटीआइ। सुप्रीम कोर्ट ने टीआरपी हेराफेरी मामले में रिपब्लिक मीडिया समूह से कहा है कि वह मुंबई पुलिस की ओर से दर्ज की गई एफआइआर के मसले पर बॉम्बे हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाए। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट कहा कि हम सभी को उच्च न्यायालयों पर भरोसा रखना चाहिए। रिपब्लिक मीडिया समूह ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे ने पैरवी की। उन्होंने मामले में चल रही जांच को लेकर शीर्ष अदालत के समक्ष संदेह जताया था।

इस पर जस्टिस धनंजय वाई चंद्रचूड, जस्टिस इंदू मल्होत्रा और न्यायमूर्ति इंदिरा बनर्जी की पीठ ने कहा कि आपके मुवक्किल का मुंबई में ही कार्यालय है। कोरोना संकट के दौर में भी बॉम्बे हाईकोर्ट काम करता रहा है। ऐसे में आप बंबई हाईकोर्ट का रुख कर सकते हैं। हालांकि शीर्ष अदालत ने परोक्ष रूप से मुंबई पुलिस के रवैये पर भी चिंता जताई। अदालत ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि बीते कुछ समय से पुलिस आयुक्तों के इंटरव्यू देने का चलन शुरू हो गया है।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाईकोर्ट जाने के सुझाव के बाद साल्वे ने याचिका वापस ले ली। बता दें कि मुंबई पुलिस ने कथित टीआरपी हेरफेर मामले में एक मामला दर्ज किया है। बीते दिनों मुंबई के पुलिस आयुक्त ने कहा था कि रिपब्लिक टीवी सहित तीन चैनलों ने कथित तौर पर टीआरपी के साथ हेराफेरी की। यह केस उस समय सामने आया जब टीआरपी का आकलन करने वाले संगठन बार्क ने हंसा रिसर्च समूह के जरिए शिकायत दर्ज कराई।सुप्रीम कोर्ट में यह याचिका रिपब्लिक मीडिया नेटवर्क के स्वामित्व वाली आर्ग आउटलायर मीडिया प्रा लि ने दाखिल की थी। याचिका में पुलिस के समन को रद करने की गुजारिश की गई थी। वहीं मुंबई पुलिस ने भी सुप्रीम कोर्ट में एक हलाफनामा दाखिल किया था। पुलिस ने रिपब्लिक मीडिया समूह की याचिका को खारिज करने की गुहार लगाई थी। पुलिस का कहना था कि याचिकाकर्ता मामले की जांच रद कराने के लिए अनुच्छेद 19 (1)(ए) की आड़ नहीं ले सकता है।

शिक्षकों के चयन की काउंसिलिंग पूरी, आज मिलेगा नियुक्ति पत्र

उत्तर प्रदेश के परिषदीय स्कूलों में 31277 शिक्षकों के चयन की काउंसिलिंग गुरुवार देर शाम पूरी हो गई है

प्रयागराज, जेएनएन। उत्तर प्रदेश के परिषदीय स्कूलों में 31277 शिक्षकों के चयन की काउंसिलिंग गुरुवार देर शाम पूरी हो गई है। अब चयनितों को शुक्रवार को नियुक्ति पत्र वितरित किया जाएगा। जिन जिलों में अधिक संख्या में अभ्यर्थी आवंटित थे, वहां काउंटरों पर भीड़ लगी रही। बेसिक शिक्षा अफसर एनआइसी की ओर से भेजी गई एक्सल शीट से अभिलेखों का सत्यापन किया। अब तेजी से नियुक्ति पत्र तैयार किए जा रहे हैं।

बेसिक शिक्षा परिषद ने शिक्षक भर्ती के लिए काउंसिलिंग की मियाद दो दिन तय की थी। अधिकांश जिलों में पहले ही दिन बड़ी संख्या में अनंतिम सूची के अभ्यर्थी पहुंचे, शेष ने दूसरे दिन पहुंचकर काउंसिलिंग कराई। परिषद सचिव प्रताप सिंह बघेल ने बताया कि काउंसिलिंग पूरी हो गई है।

बता दें कि शीर्ष कोर्ट के आदेश पर परिषदीय स्कूलों में 69000 शिक्षक भर्ती के सापेक्ष 31661 पदों पर नियुक्ति देने की प्रक्रिया शुरू हुई। परिषद ने सोमवार को 31277 अभ्यर्थियों की अनंतिम सूची जारी की थी। सभी जिलों में बुधवार व गुरुवार को काउंसिलिंग कराई गई।

इसमें अभ्यर्थियों के सभी शैक्षिक व प्रशिक्षण मूल अभिलेखों का भर्ती के लिए आनलाइन आवेदन रिकार्ड से मिलान कराया गया।

बेसिक शिक्षा परिषद मुख्यालय के सामने दिन भर चयन सूची से बाहर होने वाले अभ्यर्थी प्रदर्शन करते रहे।अभ्यर्थियों ने परिषद सचिव को ज्ञापन सौंपकर नियुक्ति देने की मांग की है। जौनपुर जिले की गेना देवी यादव का कहना है कि उनका गुणांक 71.8 है इसके बाद भी चयन सूची में नाम शामिल नहीं किया गया। इसी जिले की मीनू यादव का गुणांक 71.15, अंजू यादव का 70.32 और गीता देवी का 73.11 रहा लेकिन, उनका चयन 31277 की सूची में नहीं किया गया है। जबकि कम गुणांक वालों को नियुक्ति दी जा रही है।

कटआफ अंक घोषित करे परिषद : चयन सूची से बाहर होने वाले अभ्यर्थियों की मांग है कि जिस तरह से बेसिक शिक्षा परिषद ने सामान्य, ओबीसी, एससी व एसटी के अभ्यर्थियों के चयन की संख्या घोषित की है। इन वर्गों का अंतिम कटआफ अंक भी जारी करने की मांग हो रही है। अभ्यर्थियों का कहना है कि परिषद ने चयन में हेराफेरी की है इसलिए कटआफ अंक घोषित नहीं किया जा रहा है।

माध्यमिक शिक्षकों को शुक्रवार को नहीं मिलेगा नियुक्ति पत्र : उत्तर प्रदेश के राजकीय माध्यमिक कालेजों में एलटी ग्रेड शिक्षकों का चयन हुआ है। उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग से लिखित परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को नियुक्ति देने के लिए आनलाइन आवेदन लिया जा चुका है। 3317 सहायक अध्यापकों को नियुक्ति पत्र शुक्रवार को देने की तैयारी थी। लेकिन, उसे टाल दिया गया है। अपर शिक्षा निदेशक राजकीय अंजना गोयल ने बताया कि शुक्रवार को माध्यमिक शिक्षा विभाग वेबसाइट से नियुक्ति पत्र निर्गत नहीं होगा। इसके लिए जल्द ही नई तारीख घोषित की जाएगी। हालांकि अभी एलटी ग्रेड हिंदी विषय का सत्यापन चल रहा है और सामाजिक विज्ञान विषय का परिणाम आना शेष है।

अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बोले, मिटना चाहिए श्रीकृष्ण जन्मस्थान का कलंक

आगरा, जेएनएन। श्रीकृष्ण जन्मस्थान पर दर्शन करने पहुंचे तो हमारा हृदय द्रवित हो गया। किस तरह से विदेशी आक्रांताओं ने भगवान श्रीकृष्ण के जन्मस्थान पर अपनी मस्जिद बना ली है, जो कि सनातन धर्म के लिए एक बड़ा कलंक है। ये कलंक अब मिटना चाहिए। आजादी के बाद भी इस तरह के कलंक न मिटे तो हमारे लिए शर्म की बात है। छटीकरा मार्ग स्थित चिंतामणि कुंज में गुरुवार को पत्रकारों से रूबरू अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि ने यह बात कही। मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि के दर्शन करने के बाद महंत नरेंद्र गिरि ने कहा यह कलंक मिटना बहुत जरूरी है। इसलिए जरूरी है कि हमारे मंदिर को चार बार तोड़ा गया। आताताई मुगलों का काम यही था कि हमारे मठ, मंदिरों को तोड़कर ईदगाह और मस्जिद बनाना था। श्रीराम जन्मभूमि तो हमें मिल गई, लेकिन अब हमारा का श्रीकृष्ण जन्मभूमि को मुक्त करवाना है। मंदिर के ऊपर जो गुंबद बना है, उसे किसी तरह से तोड़ा जाए। यह काम चाहे न्यायालय के द्वारा हो या आम सहमति अथवा सभी संतों की मौजूदगी में उसका तोड़ना बहुत उचित होगा, उसे तोड़ना भी चाहिए। चूंकि वह कलंक हमारे लिए है। देश में जो मुसलमान हमारे यहां रह रहे हैं, उनसे निवेदन है कि जो मुगल आताताई आए थे उनका समर्थन न करें। हमारे साथ आएं और हमारा समर्थन करें। संत, विश्व हिंदू परिषद के साथ सभी को लेकर विशाल जनजागरण चलाया जाएगा। श्रीकृष्ण जन्मस्थान और बाबा विश्वनाथ के कलंक को मिटाया जाएगा। आज भारत आजाद है तो हम लोग जानते हैं कैसे रामजन्मभूमि का कलंक तोड़ा गया। अब कृष्ण जन्मस्थान का कलंक तोड़ा जाएगा। यमुना शुद्धिकरण के सवाल पर कहा कि इसी मुद्दे पर हमारी आज बैठक थी। लेकिन एक सदस्य के गोलोक गमन के कारण बैठक रद कर दी गई। हमारा उद्देश्य है कि यमुना के दोनों ओर हरियाली हो और यमुना शुद्ध हो। वृंदावन कुंभ के सवाल पर महंत नरेंद्र गिरि ने कहा कि ये संत समागम का ही एक रूप है। कुंभ केवल चार ही होते हैं। इसके लिए उनकी जिलाधिकारी सर्वज्ञराम मिश्र से वार्ता हुई है और उन्होंने भरोसा दिया कि परंपरागत तरीके से व्यवस्थाएं की जाएंगी। कुंभ के नाम को लेकर फैले भ्रम पर महंत गिरि ने कहा वैष्णव संत अगर हमारे पास इस तरह की कोई शिकायत लेकर आएंगे, तो उनकी शिकायत पर अमल करके आगे नाम पर विचार किया जाएगा।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज शुक्रवार, 16 अक्टूबर, 2020

संक्षेप समाचार

प्रमोद तिवारी के प्रथम जमुनापार आगमन पर भव्य स्वागत की तैयारियां जोरों पर

करछना। ब्लॉक के कांग्रेस जनों की आवश्यक बैठक करछना में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ दिनेश कुमार सोनी की अध्यक्षता में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस सीडब्ल्यूसी कांग्रेस वर्किंग कमेटी में माननीय प्रमोद तिवारी को स्थाई सदस्य बनाए जाने पर यमुनापार प्रथम आगमन पर करछना ब्लॉक के कांग्रेस जन भव्य स्वागत करेंगे परम आदरणीय प्रमोद तिवारी इलाहाबाद सिविल लाइन अपने निवास स्थान से 17अक्तूबर को चलकर 12:00 बजे नैनी मेवालाल बगिया पहुंचेंगे वहां स्वागत के बाद आदरणीय तिवारी 12:30 बजे रामपुर तिराहे पर पहुंचेंगे उनका भव्य स्वागत किया जाएगा इसके बाद 1:00 बजे कटका बैरियर पर तिवारी का स्वागत होगा कटका बैरियर के बाद तिवारी मेजा में प्रवेश करेंगे उनके स्वागत की अपील करने वालों में सर्व शिव विजय सिंह पूर्व जिला उपाध्यक्ष रंग राज सिंह सिंह महामंत्री जिला कांग्रेस कमेटी रमेश प्रताप सिंह विद्याधर मिश्र एडवोकेट नागेश पांडेय सरफरोश प्रकाश पांडे एडवोकेट सुरेश पटेल मंत्री जी आदि रहे।

दशहरा, दुर्गापूजा को लेकर पीस कमेटी की हुई बैठक

गांवों में कोरोना पॉजिटिव पाए जाने पर नहीं दी जाएगी कार्यक्रमों की अनुमति

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना परिसर में गुरुवार को दशहरा व दुर्गा पूजा को लेकर एसडीएम व सीओ फूलपुर ने रामलीला, दुर्गा पूजा कमेटी के पदाधिकारियों के साथ पीस कमेटी की बैठक की।

बैठक में मुख्य रूप से इसबार की रामलीला व दुर्गा पूजा कोविड 19 के अनुपालन के अंतर्गत प्रशासन द्वारा निर्धारित गाइड लाइन के साथ करना होगा।

बैठक में एसडीएम फूलपुर विवेक चतुर्वेदी ने आए हुए कमेटी के लोगों से कोविड 19 के गाइड लाइन को अवगत कराते हुए कहा कि इसबार रामलीला, दुर्गा पूजा स्थलों पर साफ सफाई तथा सेनिटायजर, सीसी टीवी कैमरा ,लगा होना चाहिए और जिस गांव में कोरोना पॉजिटिव पाए जाएंगे वहाँ ऐसे किसी कार्यक्रमों कि अनुमति नहीं दी जाएगी इसके साथ ही लोगों में सोशल डिस्टेंसिंग व मास्क अनिवार्य होगा। और पुलिस द्वारा कार्यक्रम अस्थल निरीक्षण की रिपोर्ट पर ही परमीशन दी जाएगी। इसके साथ सीओ फूलपुर अजीत कुमार रजक ने भी लोगों से छोटी मूर्तियाँ स्थापित करने को कहा और पांडालों में कम से कम लोगों की भीड़ होने की अपील की। तथा रोड के बगल हो रहे रामलीला या दुर्गा पूजा को बंद रखने को कहा जिसपर कुछ कमेटियों के लोगों ने नाराजगी ब्यक्त की।

दशहरा व दुर्गा पूजा को शांतिपूर्ण ढंग से मनाने की अपील करते एसडीएम व सीओ

इस दौरान इंस्पेक्टर संजय कुमार द्विवेदी, चौकी प्रभारी सहसों व हनुमानगंज दीनानाथ यादव, एसाई कौशलेन्द्र दूबे संत कबीर कलीम उल्ला, राजेश्वर प्रधान विजय सिंह, जय प्रकाश सहित सभी दुर्गा पूजा व रामलीला कमेटियों के पदाधिकारी मौजूद रहे।

कोड़ापुर गांव में चकबन्दी की आम सभा में सुनी गई समस्याएं

बैठक में ग्रामीणों को आवागमन सहित खेल का मैदान वा अम्बेडकर पार्क सहित जरूरत के अन्य पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई

फूलपुर। फूलपुर विकास खंड के कोड़ापुर गांव में गुरुवार को चक बन्दी के दौरान विभागीय अधिकारियों ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनने के लिए आम सभा की पहली बैठक बुलाई गई जिसमें ग्रामीणों को आवागमन सहित खेल का मैदान वा अम्बेडकर पार्क सहित जरूरत के अन्य पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। चकों की मालियत के लिए मौका मुआयना किया गया। गुरुवार को कोड़ापुर गांव के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में चक बन्दी की आम सभा ग्रामीणों एवं किसानों के साथ विभाग के एसीओ चक बन्दी वंदना त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें ग्रामीणों के चकों से सम्बन्धित चर्चा की गई एवं चक मार्ग सहित खेल का मैदान एवं अम्बेडकर पार्क वा बारात घर सहित अन्य जरूरत की चीजों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस मौके पर राजस्व निरीक्षक कल्प नाथ राय, लेखपाल आशीष कुमार, ग्राम प्रधान ज्ञान चन्द्र, अकील अहमद उर्फ गुड्डू, लालजी गौतम भगत,मुन्नी लाल, अनिल कुमार, राम सूरत यादव, अमित कुमार, राम लखन पटेल, उमा देवी पटेल, धनवंतरी, उषा देवी, विमला देवी गेना देवी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

ग्रामीणों की समस्या सुनते हुए अधिकारी

आधा दर्जन शातिर गिरफ्तार पांच मोबाइल बरामद

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के दूरवाणी नगर से पुलिस ने जरिए मुखबिर की सूचना पर आधा दर्जन शातिरों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से लूट के मोबाइल बरामद की है। जानकारी के मुताबिक पीडीए पुलिस चौकी प्रभारी निखिल तिवारी को गुरुवार को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि दूरवाणी नगर के महर्षि चौराहे के समीप एक पुलिया के निकट कुछ लोग लूट के इरादे से मौजूद हैं। सटीक सूचना मिलते ही पीडीए पुलिस चौकी प्रभारी दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए आधा दर्जन शातिरों को गिरफ्तार कर कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए आरोपियों में शाहजी का पूरा निवासी राशिद खान उर्फ छोटू पुत्र मोहम्मद यूसुफ, बादल गोस्वामी पुत्र वारमेश्वर गोस्वामी, मोहम्मद शैफ पुत्र अशफाक, मोहम्मद फैज पुत्र जावेद खान, मोहम्मद, पीडीए कॉलोनी निवासी अमन सिंह पुत्र दीपक सिंह व भंड़रा गांव निवासी मोहम्मद अरमान पुत्र इरशाद अहमद शामिल हैं और उनके कब्जे से लूट के पांच मोबाइल बरामद होने पर पुलिस ने सभी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए चालान कर दिए।

पुलिस की गिरफ्त में अभियुक्त

अवैध खनन व परिवहन में अभियुक्त गिरफ्तार

लालापुर। लालापुर मझियारी की तरह से आ रहे अवैध खनन व परिवहन ट्रैक्टर ट्राली को चेकिंग के दौरान मझियारी गाँव के पास से लालापुर पुलिस टीम सहित अवैध खनन एवं परिवहन करके लदा ट्रैक्टर के साथ एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया थानाध्यक्ष लालापुर अमित रॉय ने बताया कि सूचना मिली कि अवैध खनन कर के परिवाहन किया जाता है वाहन के कागजात चेक किया गया तो कोई वैध कागजात नही दिखा सका जिसको थाना लाकर अवैध बालू लोड कर परिवहन करने की धाराओं में चालान कर दिया गया।साथ में दिवेन्द्र पाण्डेय पुत्र पाण्डेय नि0 मझियारी अभियुक्त को न्यायालय भेजा गया और एक ट्रैक्टर ट्राली को भी सीज किया गया है।

तहसील परिसर में मनाया गया "विश्व हाथ सफाई दिवस"

सिरसा। तहसील मेजा परिसर में उपजिलाधिकारी मेजा रेनू सिंह के नेतृत्व में 'विश्व हाथ सफाई दिवस' मनाया गया।

उपजिलाधिकारी मेजा रेनू सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहाँ- बीमारी से बचा सकती है सफाई, सफाई ही बीमारी से लड़ने का पहला हथियार होता है। बीमारियों के संक्रमण से बचने का सबसे अच्छा तरीका हाथ को नियमित रूप से साफ करने का है। इसी उद्देश्य को लेकर 15 अक्टूबर को विश्व हाथ सफाई दिवस मनाया जाता है। तहसीलदार मेजा दीपिका सिंह ने बताया कि इस वर्ष 15 से 28 अक्टूबर तक हाथ धुलाई पखवाड़ा मनाया जा रहा है। जिसमें हाथ धोने के प्रति जागरूकता हेतु कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। बार एसोसिएशन मेजा के 'पूर्व अध्यक्ष' अजय कुमार तिवारी (तुलसीदास) ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया कि हाथों में अनदेखी गंदगी छिपी होती है, जो किसी भी वस्तु को छूने, उसका उपयोग करने एवं कई तरह के दैनिक कार्यों के कारण होती है। यह गंदगी, बगैर हाथ धोए खाद्य एवं पेय पदार्थों के सेवन से आपके शरीर में जाती हैं, और बीमारियों को जन्म देती हैं। तुलसीदास ने वैश्विक बीमारियों से बचाव के लिए हाथों की साफ सफाई के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम में तहसील कर्मचारी, अधिवक्ता एवं वादकारी उपस्थित रहे।

बैठक को संबोधित करते एसडीएम व सीओ

उतरांव थाने में पीस कमेटी बैठक संपन्न

उतरांव। हिंदू धर्म के आगामी त्यौहार नवरात्र रामलीला दशहरा को लेकर उतराव थाने में एसडीएम हंडिया सुभाष चंद्र यादव व सीओ अवधेश नारायण शुक्ला की अगुवाई में पीस कमेटी बैठक की गई। पीस कमेटी बैठक में क्षेत्र के ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य,सम्मानित गढ़, जिला पंचायत सदस्य व अन्य लोग मौजूद रहे। एसडीएम हण्डिया ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि रामलीला व दुर्गा पंडाल पर सरकार द्वारा दिए गए गाइडलाइन के अनुसार ही लोग लगाएं। शिव हंडिया अवधेश नारायण शुक्ला ने कहां की पंडाल में 60 साल की ऊपर उम्र के ऊपर का कोई पुजारी नहीं होगा। तथा 10 साल से कम उम्र के बच्चों का प्रवेश पंडाल के अंदर व रामलीला में नहीं होगा। पुजारी मास्क लगाकर लोगों को पूजा करवाएंगे। थानाध्यक्ष उतराव चंद्र भूषण मौर्य ने हिदायत देते हुए कहा कि सड़क व चौराहे पर दुर्गा पंडाल व रामलीला मंचन का आयोजन नहीं किया जाएगा। सड़क से 100 मीटर दूरी पर सरकार की गाइडलाइन के अनुसार ही मां दुर्गा का पंडाल लगाएं।पण्डाल सीसीटीवी कैमरे से लैस होगा।इस अवसर पर ग्राम प्रधान महेश गौतम सुनील भारती सुनील यादव विजय भारतीय नीलू यादव दिनेश आदि रहे।

ब्लॉक मुख्यालय पर आदिम समाज पार्टी का प्रदर्शन, दी चेतावनी

शंकरगढ़। आदिम समाज पार्टी के बैनर तले गुरुवार को दर्जनों महिला और पुरुषों ने विकास खंड शंकरगढ़ मुख्यालय पर धरना-प्रदर्शन किया और खंड विकास अधिकारी देवेंद्र कुमार ओझा को एक ज्ञापन सौंपा। बीडीओ को प्रेषित ज्ञापन में क्षेत्र की सभी 76 ग्राम पंचायतों में शासन द्वारा दी जा रही सुविधाओं का लाभ पात्रों को देने और क्षेत्र की जनसमस्याओं को दूर करने की मांग की गई।

आदिम समाज पार्टी की तरफ से बीडीओ को दिए गए ज्ञापन में स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालयों का लाभ पात्रों को देने, पीएम आवास योजना में छूटे लाभार्थियों को इस योजना से लाभान्वित कराने की मांग की गई। इसी तरह सरकारी कैंप लगाकर विभिन्न प्रकार की पेंशन योजनाओं का लाभ देने, मजदूरों का मजदूर कार्ड बनवाने, मनरेगा के तहत रुकी हुई मजदूरी का भुगतान करवाने की मांग अपेक्षित है।

इसके अलावा आदिम समाज पार्टी ने राष्ट्रीय खाद्यान्न वितरण योजना में हो रही धांधली की जांच करवाने, अस्पताल में दवाओं और जांच की व्यवस्था उपलब्ध कराने के साथ ही गरीबों और जरूरतमंदों को पट्टा उपलब्ध कराने की मांग की गई है। आदिम समाज पार्टी ने दबंगों द्वारा किए गए सरकारी, हरिजन आबादी की भूमि पर से कब्जा भी हटवाने की मांग की गई है। आदिम समाज पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल कुमार कोल ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि समय रहते इन सभी समस्याओं का निदान नहीं किया जाता तो एक माह के उपरांत आदिम समाज पार्टी तहसील और जिला मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होगी।

विकास खंड शंकरगढ़ मुख्यालय पर धरना-प्रदर्शन करते हुए

राष्ट्रीय अध्यक्ष समेत 250 लोगों पर महामारी उल्लंघन का मुकदमा दर्ज

शंकरगढ़ एसओ राजेश उपाध्याय ने बताया कि आदिम समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हंसराज कोल, पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल कोल, रमेश कुमार, गंगा दीप समेत ढाई सौ अज्ञात के खिलाफ बिना परमीशन के धरना प्रदर्शन करना, जानबूझकर कोविड-19 का संक्रमण पैदा करना और सरकारी कार्य में बाधा डालने पर धारा 188, 269, 270, 353 आईपीसी के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। बताते चलें कि इसीतरह के एक अन्य प्रकरण में समाजवादी पार्टी के नेता विनय कटियार सहित दर्जनों के खिलाफ महामारी एक्ट का उल्लंघन करने में एफआईआर दर्ज हो चुकी है।

जिला पंचायत की करोड़ों की जमीन पर भूमाफियाओं का कब्जा

करछना। तहसील के अंतर्गत पचदेवरा से भीरपुर के बीच में ग्राम पंचायत गांधीयांव के अंतर्गत लबे सड़क प्रयागराज मिजापुर मार्ग उत्तरी पटरी पर कई एकड़ जिला पंचायत की जमीन जो खतौनी में सड़क खाम बताई गई है अवैध कब्जे में है और लगभग 15 वर्षों से इसकी आवाज उठाई जा रही है लेकिन किसी के कान में जूं तक नहीं रेंग रही है जिला पंचायत कर्मचारी और अधिकारी तथा तहसील प्रशासन आंख मूंदे बैठा है करोड़ों की जमीन कौड़ियों के मोल हो गई है अवैध कब्जा धारक भूमाफिया बताए जाते हैं। एक अवैध कब्जा धारक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का पत्र भी जिला पंचायत की ओर से दिया जा चुका है इसी गांव में तालाबों की जमीन पर भी अवैध कब्जा है बार-बार शिकायत के बाद भी तहसील प्रशासन मूक दर्शक बना बैठा हैक्षेत्र के लोगों ने समबन्धित विभाग के उच्च अधिकारियों को इस ओर ध्यान केंद्रित किए जाने की मांग की है।

हाईकोर्ट समाचार

मुख्य विकास अधिकारी व जिला पंचायत राज अधिकारी 22 को तलब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कानपुर देहात के मुख्य विकास अधिकारी एवं जिला पंचायत राज अधिकारी को 22 अक्टूबर को हाजिर होने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने पूर्व में वीडियो कान्फ्रेनिंसग से हाजिर होने का आदेश दिया था। सूचना के बावजूद इस आदेश का पालन न होने पर कोर्ट मे हाजिर का आदेश दिया गया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अजय भनोट ने सुनीता देवी की याचिका पर दिया है। मालूम हो कि कानपुर देहात में भ्रष्टाचार के खिलाफ जिस अफसर की शिकायत की उसी ने शिकायत करने वाली सफाईकर्मी का तबादला कर दिया और जांच बैठा दी। हाईकोर्ट ने सरकारी वकील से तबादला करने वाले जिला पंचायत राज अधिकारी के बारे में ब्योरे के साथ जानकारी मांगी थी। साथ ही मुख्य विकास अधिकारी द्वारा तबादले के अनुमोदन का आदेश पेश करने का निर्देश दिया था। कोर्ट ने कहा था कि यदि जानकारी नहीं दी जाती तो सीडीओ एवं डीपीआरओ 12 अक्टूबर को कोर्ट में वीडियो कान्फ्रेनिंसग के जरिये हाजिर हो। न तो कोई जानकारी दी गयी और न ही वीडियो कान्फ्रेनिंसग से डीपीआरओ हाजिर हुए। याची ने डीपीआरओ के भ्रष्टाचार के खिलाफ शिकायत की थी, डीपीआरओ ने याची का सरवनखेडा विकास खंड की ग्राम पंचायत से मालसा विकास खंड की ग्राम पंचायत मालसा मे तबादला कर दिया। याची ने मालसा में कार्यभार ग्रहण कर लिया है और जांच बैठाकर याची को कारण बताओ नोटिस जारी की है। जिसे चुनौती दी गयी है।

जिला प्रशासन को बेसिक शिक्षा बोर्ड के काम में दखल का अधिकार नहीं : हाईकोर्ट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि प्रशासन के हस्तक्षेप से मुक्त करने व चेक बैलेन्स कायम रखने के लिए बेसिक शिक्षा कानून एक पूर्ण कानून है। इसके अंतर्गत शिक्षा की गुणवत्ता व संचालन के लिए अलग प्राधिकारी नियुक्त किया गया है। कमिश्नर या जिला प्रशासन को बेसिक शिक्षा बोर्ड के कार्य में हस्तक्षेप करने का क्षेत्राधिकार नहीं है। सरकार को सीमित अधिकार दिया गया है। इसलिए नियुक्ति में अनियमितता के मामले की कमिश्नर को जांच का आदेश देने का अधिकार नहीं है। राज्य सरकार की इस दलील को कोर्ट ने खारिज कर दी कि कमिश्नर ने ह्विसिल ब्लोवर की तरह कार्य करते हुए जांच का आदेश दिया है। कोर्ट ने कमिश्नर आजमगढ़ के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा की गयी नियुक्तियो की चार सदस्यीय कमेटी से जांच कराने के आदेश को अवैध व क्षेत्राधिकार से बाहर करार दिया है। तथा कमेटी की जांच रिपोर्ट 18 जनवरी 20 व अधिकारियों व प्रबंध समितियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर अध्यापकों का वेतन रोकने के बेसिक शिक्षा सचिव के आदेश 17 फरवरी 20 को रद्द कर दिया है। कोर्ट ने अध्यापकों को जारी कारण बताओ नोटिस एवं बर्खास्तगी कार्यवाही को भी अवैध मानते हुए रद्द कर दिया है और कहा है कि सचिव ने विवेक का इस्तेमाल नहीं किया। यह आदेश न्यायमूर्ति पंकज भाटिया ने श्री दुर्गा पूर्व माध्यमिक बालिका जामिन व कई अन्य विद्यालयों की प्रबंध समितियों व अध्यापक, प्रधानाध्यापको की याचिका को स्वीकार करते हुए दिया है। मालूम हो कि आजमगढ़ जिले में अध्यापकों की नियुक्ति में अनियमितता की जांच के लिए कमिश्नर ने सेवानिवृत होने से छह महीने पहले चार सदस्यीय समिति बना दी। उसने बीएसए कार्यालय के रिकार्ड देखकर बिना याचियों को नोटिस दिये जांच रिपोर्ट पेश कर कार्यवाही की संस्तुति कर दी। कमिश्नर ने इसे अनुमोदन के लिए सचिव को भेज दिया। जिस पर हुई कार्यवाही को चुनौती दी गयी थी। बहस की गयी कि शिक्षा के लिए अलग कानून है। अनियमितता पर कार्यवाही के लिए प्राधिकारी नियुक्त है। प्रशासनिक अधिकारियों को इस मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। जिसे कोर्ट ने सही माना और अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर की गयी कमिश्नर व सचिव की कार्यवाही रद्द कर दिया है।

प्रवक्ता डायट भर्ती रिजल्ट में क्षैतिज आरक्षण लागू करने को चुनौती, जवाब तलब

प्रयागराज। लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रवक्ता डायट की नियुक्ति प्रक्रिया में गलत क्षैतिज आरक्षण लागू कर अनारक्षित वर्ग में आरक्षित कोटे की महिलाओं को नियुक्ति दिए जाने को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है। कोर्ट ने इस मामले में आयोग व दस चयनित महिला अभ्यर्थियों को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब मांगा है। मंजुल प्रकाश मिश्र व अन्य की याचिका पर न्यायमूर्ति अजीत कुमार सुनवाई कर रहे हैं। याची का कहना था कि आयोग ने डायट में प्रवक्ता के 65 पदों पर चयन के लिए फरवरी 2014 को विज्ञापन जारी किया था। इसमें से 36 पद अनारक्षित व 20 पद ओबीसी और 5 पद एससी तथा एक पद एसटी अभ्यर्थी के लिए आरक्षित था। याची ने गणित विषय के प्रवक्ता पद हेतु आवेदन किया। लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में शामिल हुआ। 23 नवंबर 2019 को जारी परिणाम में याची का चयन नहीं हो सका। अधिवक्ता का कहना था कि अनारक्षित श्रेणी के 36 पदों के हिसाब से महिलाओं का क्षैतिज आरक्षण सात पदों पर होना चाहिए। इसमें से दो पद तो अनारक्षित महिलाओं से भरे गए जबकि पांच पदों पर ओबीसी महिला की नियुक्ति कर दी गई। उधर ओबीसी कोटे में भी पांच ओबीसी महिलाओं की नियुक्ति कर दी गई। जबकि यह तय नियम है कि आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थी को उसी के वर्ग में क्षैतिज आरक्षण दिया जाएगा। साथ ही यदि आरक्षित वर्ग की महिला मेरिट के आधार पर अनारक्षित वर्ग में चयनित हो जाती है तो अरक्षित श्रेणी में क्षैतिज आरक्षण नहीं दिया जाएगा। कोर्ट ने प्रकरण को विचारणीय मानते हुए लोक सेवा आयोग तथा दस चयनित ओबीसी अभ्यर्थियों को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब मांगा है।

पर्यावरण कार्यकर्ता की गिरफ्तारी पर रोक

प्रयागराज। हाईकोर्ट ने सोनभद्र के पर्यावरण कार्यकर्ता चैधरी यशवंत सिंह की गिरफ्तारी और उनके खिलाफ दर्ज मुकदमे की विवेचना पर अगले आदेश तक के लिए रोक लगा दी है। कोर्ट ने राज्य सरकार और वादी मुकदमा को नोटिस जारी कर अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया है। चैधरी यशवंत ने अपने खिलाफ दर्ज प्राथमिकी को हाईकोर्ट में चुनौती दी है। याची का कहना है कि उसके खिलाफ मेसर्स स्टार स्टोन क्रशर ने रंगदारी मांगने का मुकदमा दर्ज कराया है। जबकि वास्तविकता यह है कि याची पर्यावरण और सामाजिक कार्यकर्ता है। उनके सोनभद्र में अवैध खनन और अवैध रूप से चल रहे स्टोन क्रशन प्लांट के खिलाफ नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में याचिका दाखिल की है। उसकी याचिका पर ग्रीन ट्रिब्यूनल एक मॉनिटरिंग कमेटी गठित है और अवैध खनन पर रोक लगाने सहित तमाम निर्देश दिए हैं। वादी का स्टोन प्लांट भी ट्रिब्यूनल की कमेटी द्वारा निगरानी में है।

इससे क्षुब्ध होकर उसने फर्जी मुकदमा दर्ज करा दिया है। न्यायमूर्ति रमेश सिन्हा और न्यायमूर्ति समित गोपाल ने इस मामले मे अगले आदेश तक याची की गिरफ्तार और दर्ज प्राथमिकी की विवेचना पर रोक लगाते हुए चार सप्ताह में जवाब मांगा है।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

चार पहिया वाहन की टक्कर से बच्चे की मौत

प्रयागराज। कीडगंज थाना क्षेत्र में नए यमुनापुल पर गुरूवार की सुबह टहलने गए बच्चे की किसी चार पहिया वाहन की टक्कर से मौत हो गई। हालांकि उसकी जान बचाने के लिए एसआरएन अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सूचना पर पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। कीडगंज धरिकार बस्ती मिन्टो पार्क के समीप निवासी धरम 10वर्ष पुत्र गंगादीन पांच भाइयों में चैथे नम्बर का था। उसके दो बहने भी है। वह कक्षा छह का छात्र था। बताया जा रहा है कि गुरूवार की सुबह वह घर से टहलने के लिए नये यमुनापुल पर गया। जहां किसी चार पहिया वाहन की चपेट में आने से गम्भीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे उपचार के लिए स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया जहां उसकी मौत हो गई। शव को चिकित्सकों ने अन्त्य परीक्षण के लिए भेज दिया। अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि सड़क हादसे में एक बच्चे की जान चली गई। कीडगंज थाने की पुलिस अज्ञात में मुकदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई कर रही है।

विभाकर शास्त्री बने प्रदेश कांग्रेस सलाहकार समिति के सदस्य

प्रयागराज। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा भारत रत्न लाल बहादुर शास्त्री के पौत्र व पूर्व राष्ट्रीय सचिव विभाकर शास्त्री को प्रदेश कांग्रेस कमेटी सलाहकार समिति का सदस्य बनाया है। सदस्य बनाए जाने पर स्थानीय कांग्रेस जनों ने स्वागत किया है। जिलाध्यक्ष राम किशुन पटेल की अध्यक्षता में गुरुवार को बैठक हुई । जिसमें पूर्व महापौर चौ0 जितेन्द्र नाथ सिंह ने हर्ष ब्यक्त किया और शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया । कहा कि शास्त्री की ईमानदारी और संगठन के प्रति समर्पण का यह ईनाम है इससे पार्टी को मजबूती मिलेगी। शहर अध्यक्ष नफीस अनवर, किशोर वार्ष्णेय, फुजैल हाशमी, हरिकेश त्रिपाठी, डॉ अजय प्रकाश सरोज, तस्लीम उद्दीन, डा0एस बी लाल, अनिल द्विवेदी, डॉ अजय प्रकाश सरोज, अजय श्रीवास्तव, परवेज सिद्दीकी, सुरेश यादव, ओमप्रकाश त्रिपाठी, जिला सचिव अजीत भारती, आलोक पाण्डेय, मो0 असलम, अनिल श्रीवास्तव, अरशद अली, डा0पुनम पटेल, अजय मिश्रा, केशव पासी, शशि कांत त्रिपाठी, अरुण चौरसिया, राजेन्द्र जायसवाल, सुभाष यादव, राकेश श्रीवास्तव आदि ने खुशी जाहिर की है ।

मण्डलायुक्त ने राष्ट्रीय राजमार्गों के कार्यों की किया प्रगति समीक्षा

सम्बंधित विभागों से समन्वय स्थापित कर परियोजनाओं को समय से पूर्ण कराने के दिए निर्देश

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर रमेश कुमार गुरूवार को गांधी सभागार में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण एवं चौड़ीकरण के कार्यों की प्रगति समीक्षा करते हुए एनएचआई सहित अन्य सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाईयां पूर्ण करते हुए सड़क निर्माण तथा चौड़ीकरण के कार्यों को तीव्र गति से गुणवत्ता के साथ पूर्ण कराये जाने का निर्देश दिया है। बैठक में फाफामऊ के मलाक हरहर से गंगा नदी पर बनने वाले 6 लेन पुल मार्ग के निर्माण कार्य, हंडिया-बनारस मार्ग, चकेरी-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग, सोरांव से आनंद भवन तक के चौड़ीकरण का कार्य, प्रयागराज से मिर्जापुर, प्रयागराज- प्रतापगढ़-चित्रकूट मार्ग, प्रतापगढ़ बाईपास मार्गो सहित अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की प्रगति समीक्षा की। मण्डलायुक्त ने गंगा नदी पर बनने वाले 6 लेन पुल हेतु भूस्वामियों के मुआवजे को कैम्प लगाकर वितरित कराये जाने का निर्देश दिया है। हंडिया-बनारस राजमार्ग के बारे में बताया गया कि इसका निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। मण्डलायुक्त ने हंडिया के पास मोड़ पर बड़े साइज का दिशा सूचक बोर्ड लगाए जाने का निर्देश दिया है। इसी तरह से प्रतापगढ़ बाईपास के निर्माण सम्बंधी सभी प्रकार की समस्याओं को दिवाली से पहले समाधान कराकर निर्माण कार्य कराये जाने का निर्देश दिया है। मण्डलायुक्त ने राजस्व विभाग, विद्युत विभाग, वन विभाग तथा एनएचआई को आपस में समन्वय स्थापित कर तथा समस्त औपचारिकतायें पूर्ण कराते हुए निर्माण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय से पूर्ण कराये जाने के लिए कहा। चकेरी-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग के निर्माण हेतु सभी औपचारिकतायें पूर्ण कराते हुए निर्माण कार्य को शीघ्रता से कराये जाने का निर्देश दिये है। साथ ही सोरांव से आनंद भवन तक सड़क के चैड़ीकरण के कार्य को भी शीघ्रता से कराये जाने का निर्देश दिया। मण्डलायुक्त ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित करते हुए पूर्ण मनोयोग के साथ परियोजनाओं को गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ पूर्ण कराये जाने के लिए कहा है। इस अवसर पर एडीएम नजूल- गंगाराम गुप्ता, प्रभागीय वनाधिकारी वाई0पी0 शुक्ला, एचएनआई व पीडब्लूडी के अभियंतागणों के अलावा अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अधिकारियों संग समीक्षा बैठक करते मण्डलायुक्त

राजेंद्र पालीवाल बने रामलीला कमेटी महासंघ के महामंत्री

प्रयागराज। प्रयागराज रामलीला कमेटी महासंघ की एक बैठक संघ अध्यक्ष फूलचंद दुबे की अध्यक्षता में दिव्याभा इंटर कॉलेज अल्लापुर में हुई। जिसमें राजेंद्र पालीवाल को संघ के महामंत्री के रूप में चुना गया। श्री पालीवाल श्रीदारागंज रामलीला कमेटी के अनेकों वर्ष महामंत्री रह चुके हैं तथा अपने कार्यकाल में दारागंज रामलीला कमेटी का अनेकों प्रकार से विकास किया था। इस अवसर पर प्रमोद बाबू झा संगठन मंत्री, श्याम सूरत पांडेय संगठन मंत्री, शिवेंद्र मिश्र नगर संयोजक बनाए गए। संघ अध्यक्ष ने सर्वसम्मत से यह प्रस्ताव पास किया कि सभी रामलीला कमेटी अपनी ओर से आए दर्शकों को मास्क वितरित करें और उनके हाथों को सैनिटाइज कराएं एवं सामाजिक दूरी का पालन करें। बैठक में कोषाध्यक्ष जितेंद्र गौड़, समन्वयक मूंछ सम्राट दुकानजी, संयोजक कुल्लू यादव, संरक्षक मधु चकहा, लालता प्रसाद पांडेय, संजीव कुमार बाजपेई, नयन कुशवाहा, राकेश जायसवाल, बी.बी दुबे, श्याम लाल पांडेय, विजय कुमार गुप्ता, रवि वर्मा, प्रवीण कुमार द्विवेदी, शिव प्रसाद मौर्य, मीडिया प्रभारी तीर्थराज पांडेय आदि उपस्थित रहे।

कोविड-19 के मानकों के अनुसार हो दुर्गापूजा एवं दशहरा: डीएम

प्रयागराज। जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी ने संगम सभागार में देर शाम दुर्गापूजा एवं दशहरा के आयोजन के सम्बंध में बैठक के दौरान कहा कि कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन कराते हुए ही दुर्गापूजा के आयोजन की अनुमति दी जायेगी। इसका विशेष ध्यान रखा जाय कि इस अवसर पर अधिक संख्या में भीड़ एकत्र न होने पाये।

जिलाधिकारी ने कहा कि पण्डालों में प्रवेश और बाहर निकलने का अलग-अलग मार्ग सुनिश्चित होना चाहिए। आयोजकों को आश्वस्त करना होगा कि वे अपने यहां लगने वाले पण्डालों में कोविड-19 के मानकों का कड़ाई से पालन करेंगे एवं किसी भी स्थिति में भीड़ एकत्र नहीं होने देंगे। उन्होंने कहा कि पण्डालों के बाहर न तो किसी प्रकार के ठेले की दुकान लगेगी और न ही किसी प्रकार के खाद्य सामग्री की बिक्री होगी। दशहरा के दौरान होने वाली रामलीला का मंचन एवं राम चरित्र मानस पाठ के बारे में भी अधिकारियों को निर्देश दिया कि विभिन्न रामलीला कमेटियों के पदाधिकारियों के साथ वार्ता कर सुनिश्चित कर ले कि कोविड-19 के मानको का शत-प्रतिशत अनुपालन किया जायेगा।

जिलाधिकारी ने ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाले दुर्गा पूजा एवं रामलीला मंचन के बारे में भी विशेष सर्तकता एवं सावधानी बरतने के निर्देश दिया। कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में भीड़ को नियंत्रित करना बड़ी चुनौती है, इसके लिए पहले से ही सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित कर ली जाये। उन्होंने मूर्तियों के विसर्जन के बारे में कहा कि विसर्जन की जगह पहले से सुनिश्चित कर ली जाये और वहां पानी की उपलब्धता, लाइट, साफ-सफाई की पहले से ही व्यवस्था सुनिश्चित कर ली जाये, जिससे किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न होने पाये।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सर्वश्रेष्ठ कुमार त्रिपाठी ने पुलिस विभाग के अधिकारियों को कानून व्यवस्था एवं शांति व्यवस्था बनाये रखने के विशेष निर्देश दिये हैं। कुछ जगहों पर पूर्व में अप्रिय घटनाओं की जानकारी मिली है, ऐसी स्थिति में उन जगहों पर विशेष सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विसर्जन स्थल तक पुलिस एवं गांव का सम्भ्रांत व्यक्ति जरूर होना चाहिए, जिससे किसी प्रकार की अव्यवस्था न होने पाये। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिये कि विसर्जन स्थलों तालाबों, पोखरों इत्यादि में अधिक गहराई वाले जगहों पर रेड सिग्नल जरूर होना चाहिए। जिससे विसर्जन के समय लोगो को गहराई की जानकारी हो सके और किसी अप्रिय घटना को रोका जा सके। बैठक में एडीएम वित्त एवं राजस्व, एडीएम प्रशासन, एडीएम सिटी ए.के कनौजिया सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे।

त्यौहार के तैयारियों की बैठक करते डीएम

ज्यों-ज्यों जनता जाग रही है, त्यों-त्यों भाजपा भाग रही है : नरेंद्र सिंह

प्रयागराज। आम आदमी आशा भरी निगाहों से अखिलेश यादव जी की ओर देख रहा है। जनता के सरोकारों से वंचित सरकार को अबकी बार कुर्सी से उतार फेंकेगी जनता। उक्त बातें सपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह अखिलेश यादव द्वारा जारी डिजिटल पत्रक को छपवा कर मेजा क्षेत्र के सभी वर्गों मे वितरण करते हुए कहा है।

पत्रक वितरण के क्रम मे गुरूवार को नरेन्द्र सिंह ने मेजा क्षेत्र के कई किसानों,सामाजिक कार्यकर्ताओं, तथा युवाओं से मिलकर प्रदेश में पुनः अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए अगस्त क्रांति की समाजवादी दिशा पत्रक सौंपकर तथा लाल टोपी पहना कर सपा के समर्थन की अपील की। मेजा क्षेत्र के तेन्दुआ, खौर, गौरा, उसकी, जरार सहित विभिन्न गाँवों मे भ्रमण करके पत्रक बांट कर प्रदेश की खुशहाली के लिए 2022 मे समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए सहयोग की अपील की।

सपा नेता नरेन्द्र सिंह ने कहा कि हठधर्मी और दुराग्रही सरकार द्वारा लगातार जनहित के कार्यों की अनदेखी की जा रही है, किसानों और युवाओं को अपमानित करना इस सरकार के पतन का कारण बनेगा।

सरकार को आड़े हाथों लेते हुए सपा नेता नरेन्द्र सिंह ने कहा कि भाजपा शासन में आम आदमी को निराश और हताश होना पड़ा है। तमाम वादे कर सत्ता में आने के बाद भाजपा देश में पूंजीवाद को बढ़ावा दे कर, देश की आर्थिक और सामाजिक दशा को तहस-नहस कर रही है ' उन्होने सर्व कल्याण के लिए समाजवाद को ही सही रास्ता सुझाया है । इस मौके पर सर्व श्री महिपाल सिंह गुड्डू, शिवाकान्त पाण्डेय एडवोकेट, महेन्द्र कुमार त्रिपाठी, भोला पाल, हिमांशु कुमार सिंह, श्री कान्त यादव, कमलभान सिंह, जयप्रकाश यादव, राम सागर यादव, फूलचंद गुप्ता, धीरज यादव, रायसिह यादव, आशीष शुक्ला, सत्येन्द्र सिंह,मोहम्मद स्वालेह मज्जू , नियाज अहमद, सद्दाम हुसैन, मोहम्मद खुर्शीद, कमलेश कुशवाहा, भरत मौर्या, सुरेश सिंह पटेल, विश्वनाथ पूर्व प्रधान, भूपेन्द्र सिंह मुन्ना, डाक्टर कपूर चन्द्र विश्वकर्मा, राम गोविन्द आदिवासी बीडीसी, हरिशंकर पाल, परवेज हुसैन, रिजवान खान, रफीक अहमद, अशर्फी पाल, पारस निषाद, गौरी शंकर सिंह, आलोक यादव, मनोज आदिवासी,आदि रहे।

लोगों को पत्रक वितरित करते सपा नेता नरेन्द्र सिंह

आधा दर्जन शातिर गिरफ्तार पांच मोबाइल बरामद

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के दूरवाणी नगर से पुलिस ने जरिए मुखबिर की सूचना पर आधा दर्जन शातिरों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से लूट के मोबाइल बरामद की है। जानकारी के मुताबिक पीडीए पुलिस चौकी प्रभारी निखिल तिवारी को गुरुवार को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि दूरवाणी नगर के महर्षि चौराहे के समीप एक पुलिया के निकट कुछ लोग लूट के इरादे से मौजूद हैं। सटीक सूचना मिलते ही पीडीए पुलिस चौकी प्रभारी दलबल के साथ मौके पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए आधा दर्जन शातिरों को गिरफ्तार कर कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़े गए आरोपियों में शाहजी का पूरा निवासी राशिद खान उर्फ छोटू पुत्र मोहम्मद यूसुफ, बादल गोस्वामी पुत्र वारमेश्वर गोस्वामी, मोहम्मद शैफ पुत्र अशफाक, मोहम्मद फैज पुत्र जावेद खान, मोहम्मद, पीडीए कॉलोनी निवासी अमन सिंह पुत्र दीपक सिंह व भंड़रा गांव निवासी मोहम्मद अरमान पुत्र इरशाद अहमद शामिल हैं और उनके कब्जे से लूट के पांच मोबाइल बरामद होने पर पुलिस ने सभी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए चालान कर दिए।

स्वास्थ्य सेवाओं में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं : जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी भानु चन्द्र गोस्वामी की अध्यक्षता में बुधवार की देर शाम संगम सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति(शासी निकाय) की बैठक संपन्न हुई। बैठक में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। जननी सुरक्षा योजना में गत वर्ष की तुलना में संस्थागत प्रसव कम होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए जिलाधिकारी ने क्षेत्र की सभी गर्भवती महिलाओं की सूची तैयार कर उनको सरकारी चिकित्सालयों में संस्थागत प्रसव कराने के लिए आशाओं के माध्यम से प्रेरित करने का निर्देश दिया। प्रथम सन्दर्भन इकाइयों की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, सोरांव में कार्यरत महिला चिकित्सक डॉ. अर्चना सिंह को इस वित्तीयवर्ष में मात्र 2 सिजेरियन प्रसव कराने पर कारण बताओं नोटिस जारी करने का निर्देश मुख्य चिकित्साधिकारी को दिया। ल्भ् पोर्टल पर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों का रजिस्ट्रेशन एवं अपडेशन तथा प्रधानमंत्री मातृत्व बंदन योजना की प्रगति में एक सप्ताह में सुधार नहीं होने पर कठोर कार्यवाही की चेतावनी दी। जिलाधिकारी में प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान में चिन्हित सीवियर एनिमिक गर्भवती का इलाज तथा भ्त्च महिलाओं का सुरक्षित संथागत प्रसव हेतु लाइन लिस्ट कर निरंतर फालोअप करने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने परिवार कल्याण, नियमित टीकाकरण, आशा का भुगतान तथा लाभार्थियों का निर्धारित समय में भुगतान में सुधार करने हेतु भी निर्देशित किया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी आशीष कुमार, सीएमओ डॉ जीएस बाजपेई, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. सत्येन राय, डॉ आरएस ठाकुर, डॉ तीरथलाल, डीपीएम विनोदकुमार सभी प्रमुख मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, सभी ब्लॉकों के चिकित्सा अधीक्षक आदि ने भाग लिया।

वर्किंग न्यूज रिपोर्टर क्लब का हुआ गठन

नैनी। स्थानीय पत्रकारों की एक बैठक गुरुवार को छिवकी रोड स्थित एक निजी गेस्ट हाउस में संपन्न हुई जिसमें वर्किंग न्यूज रिपोर्टर क्लब के नाम से एक संगठन का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष हजारीलाल कुशवाहा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील गिरी,उपाध्यक्ष श्याम वर्मा सचिव सुनील केसरवानी, कोषाध्यक्ष अजय सिंह, संगठन मंत्री अखिलेश शुक्ला व प्रचार प्रसार मंत्री राहुल जायसवाल का मनोनयन किया गया।

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

शक्ति आराधना पर्व एक अनूठा सांगीतिक समारोह सत्रह से : डॉ रेनू जौहरी

प्रयागराज। पद्मभूषण पं. सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज की 101वीं जयंती के उपलक्ष्य में शक्ति आराधना पर्व नौ दिवसीय विशाल संगीत समारोह 17 से 25 अक्टूबर तक प्रतिदिन सायं सात बजे फेसबुक पेज से लाइव प्रसारित होगा। समारोह की प्रणेता व आयोजिका डॉ.रेनू जौहरी के अनुसार पद्मभूषण पं. सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज की 101वीं जयंती के उपलक्ष्य में यह अनूठा समारोह होने जा रहा है। जो शक्ति के उपासक थे। उन्होंने गहन साधना के उपरांत तबला वादन के क्षेत्र में सिद्धि प्राप्त की थी। उनको श्रद्धांजलि स्वरूप इस समारोह में नौ दिन शक्ति स्वरूपा 18 महिला कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करेंगी। प्रतिदिन एक महिला ताबलिक व महिला गायन कलाकार अपनी कला की प्रस्तुतियां देंगी। नौ महिला तबला कलाकार किसी समारोह का हिस्सा बने ऐसा पहली बार हो रहा है। महिला तबला कलाकारों में भिलाई से पूनम सर्पे, दीपमाला भट्टाचार्या कोलकाता, रितु मिश्रा झारखंड, रेशमा गवास पणजी गोवा, डॉ.प्रिया तिवारी दिल्ली, गायत्री आगरा, प्रयागराज से डॉ. कुहू मालवीय एवं डॉ. इच्छा नायर, अलीशा मिश्रा वाराणसी, इसके अतिरिक्त महिला गायन कलाकारों में कोलकाता से योग्न्यासेनी मजूमदार मित्रा एवं अंजना कुमारी, पूणे से नयनिका नन्दी, प्रयागराज से डॉ.शिल्पी श्रीवास्तव, डॉ.शुचि तिवारी, अंकिता चतुवेर्दी मालवीया एवं डॉ.श्रेया श्रीवास्तव, सुलग्ना हलदेर बैंगलोर, डॉ. भूमिका द्विवेदी जोधपुर हैं। इसके अतिरिक्त सहायक कलाकारों हारमोनियम में संदीप वोकलीवार, प्रभात मुखर्जी, अमीर हुसैन, उपेन्द्र रत्नाकार सलगांवकर, कुहू मालवीय, डॉ. विनोद मिश्र तथा तबला में विशाल साहू, देवेश साहू, बिलाल खान सोलनवी, सुरोजीत मुखर्जी प्रमुख हैं।

भाजपा का प्रशिक्षण शिविर दस विषयों पर आधारित : गणेश केसरवानी

प्रयागराज। भाजपा महानगर कार्यालय कीडगंज में आयोजित मंडल अध्यक्षों की बैठक में भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने कहा कि 18 अक्टूबर से मंडल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन प्रयागराज महानगर के प्रत्येक मंडलों में किया जाएगा। जो मुख्य दस विषयों पर आधारित होगी। उन्होंने बताया कि इसमें मुख्य रूप से भाजपा का इतिहास एवं विकास, हमारा विचार परिवार, व्यक्तित्व का विकास, आज के भारत की वैचारिक मुख्य धारा और हमारी विचारधारा, हमारी कार्य पद्धति एवं संगठन की संरचना में हमारी भूमिका, सुरक्षा सामर्थ्य के साथ आत्मनिर्भर भारत का निर्माण, सोशल मीडिया का उपयोग, पिछले छह सालों में हुए अंत्योदय प्रयत्न, 2014 के बाद भारतीय राजनीति में बदलाव भारतीय जनता पार्टी एवं हमारा दायित्व, प्रदेश भाजपा सरकार की उपलब्धियां, राज्य की राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं भाजपा की भूमिका आदि विषयों पर कार्यकताओं को मार्गदर्शन वक्ताओं द्वारा दिया जाएगा।

अब्दुल कलाम ने भारत को परमाणु शक्ति संपन्न ही नहीं अंतरिक्ष भी शक्तिशाली बनाया : केसरवानी

प्रयागराज। भाजपा महानगर अध्यक्ष गणेश केसरवानी ने भाजपा महानगर कार्यालय कीडगंज में भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि देश एपीजे अब्दुल कलाम के योगदान को कभी भूल नहीं सकता। उन्होंने भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश ही नहीं बल्कि अंतरिक्ष में भी भारत को शक्तिशाली बनाया।

इस अवसर पर भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम मंडल की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। महानगर अध्यक्ष ने कहा कि उनका सारा जीवन सादा एवं उच्च विचारों से भरा रहा। राष्ट्रपति के रूप में भी वह बड़ी सहजता एवं सरलता के साथ लोगों से मिलते रहे। बच्चों को प्यार करते रहे और विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते रहे। वे एक महान आदर्श स्थापित करके इस दुनिया से चले गए, जिन्हें आज भी पूरा भारतवासी गर्व से उनको सलाम करता है।

कार्यक्रम का संचालन रमेश पासी ने किया। इस दौरान रणजीत सिंह, विवेक अग्रवाल, राजेश केसरवानी, राजू पाठक, सचिन जायसवाल, सुभाष वैश्य, राजन शुक्ला, मनोज मिश्रा, गौरव गुप्ता, ज्ञान बाबू केसरवानी, किशोरी लाल जायसवाल, अजय सिंह, विजय श्रीवास्तव, दिनेश विश्वकर्मा, दिलीप केसरवानी, बाली शंकर त्रिपाठी, अनुराग सोनकर, विजय सिंह, संस्कार सिन्हा, प्रभात मोहन श्रीवास्तव आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

प्रयागराज शुक्रवार, 16 अक्टूबर, 2020

क्रियायोग सन्देश

सांच को आंच नहीं

आज सबसे बड़ा भ्रम यह है कि हर व्यक्ति समझता है कि वह सच जानता है। वह जो कुछ आंखों से देखता है, कान से सुनता है, मन बुद्धि से विचार करता है, उसे सत्य मानता है। आत्मज्ञानी ऋषियों ने सिद्ध किया है कि सांच को आंच नहीं अर्थात सत्य जानने वाले के ऊपर कभी भी कोई आंच नहीं आती है। यहां आंच का अर्थ दुःख, विपत्ति, कष्ट, बीमारी, तनाव, चिंता, डर, अज्ञानता से है।

अगर मनुष्य आंच से ग्रसित है तो वह असत्य को सत्य और सत्य को असत्य के रूप में जानता है। मनुष्य यह कैसे समझे कि वह अज्ञानता का शिकार है या नहीं?

आंच से मुक्त होने पर साधक के अंदर परम ब्रह्म के संपूर्ण गुण प्रकाशित हो जाते हैं ' वह स्वयं को सर्वव्यापी (सर्वत्र व्याप्त), सर्वशक्तिमान (अनंत शक्तियों से युक्त), सर्वज्ञ (अनंत ज्ञान से विभूषित) अनुभव करता है। सत्य जानने वाला भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञाता होता है। यदि मनुष्य ज्ञान की उस उच्चतम अवस्था प्राप्त नहीं किया है जहां वह स्वयं को अमर आत्मा के रूप में जान लेता है तो उसे यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि शरीर, मन, बुद्धि, इंद्रियों, आदि के द्वारा वह जो कुछ भी सोचता, समझता है, वह असत्य या आंशिक सत्य है। सत्य की खोज करने का सर्वसुलभ व सरलतम मार्ग क्रियायोग साधना है। क्रियायोग का अभ्यास करने पर साधक सत्य का साक्षात्कार कर लेता है जिससे वह समस्त कष्टों से मुक्त होकर अपने अमर स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर एकोऽहम्बहुष्यामि की अनुभूत करता है। इस अवस्था को ही मुक्ति कहते हैं।

मुक्ति की यात्रा...

मुक्ति हर व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य है। मुक्ति के शाश्वत पथ पर अग्रसित होने तथा मुक्ति के परम लक्ष्य के अंतिम बिंदु तक पहुंचने की दिव्य यात्रा क्रियायोग की साधना है। मानव स्वरूप के सिर व रीढ़ में स्थित सूक्ष्म प्रदेश जहां पर सात दिव्य चक्र स्थित हैं, मुक्ति का मार्ग है क्रियायोग साधना के द्वारा अपनी चेतना को सिर व रीढ़ के अंदर प्रवाहित करना, मुक्ति पथ पर गमन करना है। सिर व रीढ़ मे प्रवाहित होने वाली परमशक्ति जिसे गंगा, यमुना, सरस्वती अथवा योगिक भाषा में इंडा पिंगला, सुषुम्ना कहा गया है, मुक्ति पथ पर मिलने वाली अविरल ज्ञान धाराएं हैं। क्रियायोग साधक इन ज्ञान धाराओं में अविरल स्नान करता हुआ कूटस्थ परमशक्ति में लीन हो जाता है। कूटस्थ सिर के पिछले भाग में मेडुला के अंदर स्थित दिव्य शक्ति केंद्र है जहां स्थित शक्ति सूर्य के समान दिव्य ज्ञान के रूप में प्रकाशमान है। क्रियायोग साधना के द्वारा सिर व रीढ़ रूपी मुक्ति मार्ग में प्रवेश करके प्राणशक्ति को ऊर्धमुखी करके कूटस्थ में स्थित हो जाना, मुक्ति के शाश्वत केंद्र तक पहुंचना है ' जहां पहुंचते ही आदि, मध्य, अंत एक बिंदु पर दिखताा है। ऐसी अवस्था में साधक अतीत, वर्तमान भविष्य का ज्ञाता हो जाता है और वह संपूर्ण कष्टों से सदा के लिए मुक्त हो जाता है।

क्रियायोग की साधना के द्वारा प्राणशक्ति को कूटस्थ में स्थापित करने पर उस मुक्ति की प्राप्ति होती है, जिससे अपने अमर स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। भय, अशांति, अज्ञान, काम, क्रोध, लोभ मोह, मद, मत्सर (आदत, अहंकार, अज्ञान) रूपी बेड़ियां जिनमें मनुष्य जन्मों-जन्मों से जकड़ा है, के बंधन से मुक्त होकर सदा सदा के लिए शाश्वत, शक्ति, ज्ञान, धैर्य, साहस की अनुभूत में प्राप्तत दिव्य स्वतंत्रता का अनुभव करता है। आंतरिक मुक्ति मार्ग के पथ पर गमन (सिर व रीढ़ में चेतना का प्रवेश) तथा मुक्ति की संपूर्णता की प्राप्ति(कूटस्थ से मिलन) के मार्ग पर चलने वाले साधक को वास्तविक स्वतंत्रता की प्राप्ति होती है। उसी स्वतंत्रता को शास्त्रों में अष्टसिद्धियां कहा गया है। इसी सिद्धि अवस्था में स्थित हुआ मनुष्य संपूर्ण कर्मों का संपादन करता हुआ अकर्ता की अलौकिक स्थिति में रहता है ' इसी सिद्धि का वर्णन करते हुए शास्त्रों में कहा गया है बिन कर कर्म करें बिधि नाना। आइए क्रियायोग की साधना के द्वारा मुक्ति के मार्ग पर गमन करे तथा मुक्ति के परमधाम तक पहुंचकर अमरता का दर्शन करके स्वयं को धन्य करें। मुक्ति की यात्राा अमरता की यात्रा है जिस पर चलने पर साधक के अंदर अखंड शांति व अनंत ज्ञान की अविरल धारा का प्रवाह होता है।

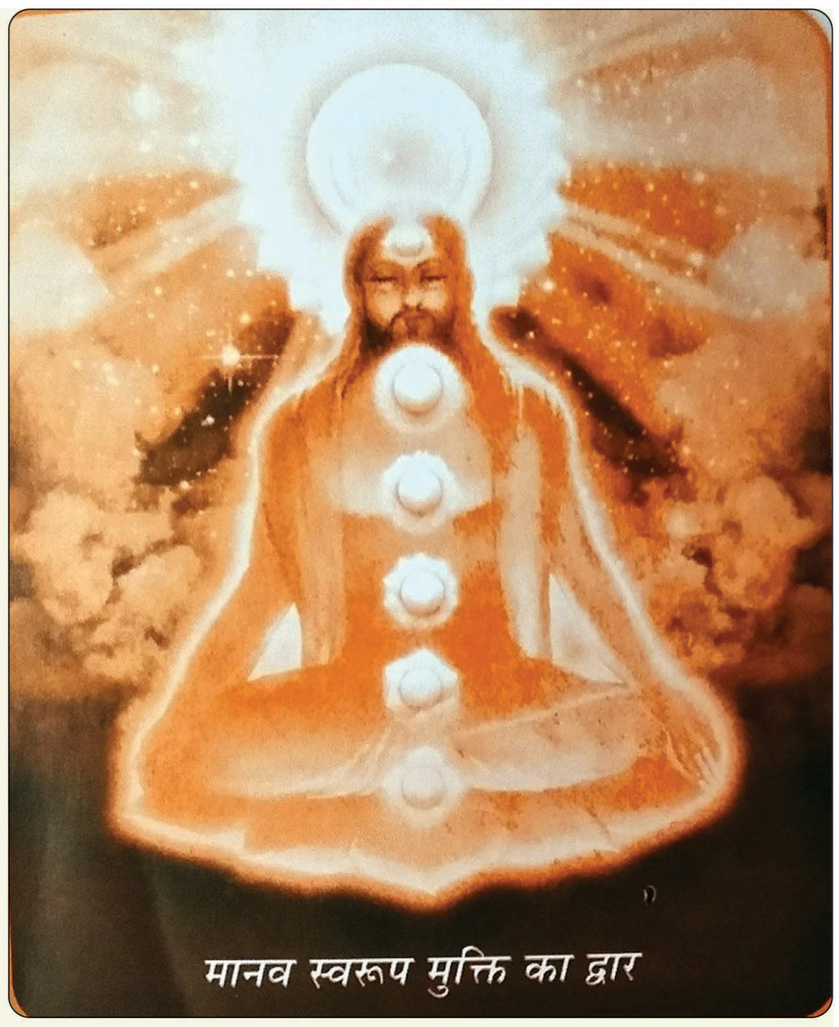

(1) अणिमा सिद्धि - अपने शरीर को या अन्य किसी भी वस्तु को जितना चाहे छोटा करने की, यहां तक कि अणु जितना छोटा करने की भी सिद्धि है।

(2) महिमा सिद्धि - यह अपने शरीर या किसी भी अन्य वस्तु को जितना चाहे महत्त या बड़ा करने सिद्धि।

(3) लधीमा सिद्धि - अपने शरीर या अन्य किसी भी वस्तु को जितना चाहे लघु या हल्का करने की सिद्धि।

(4) गरिमा सिद्धि- अपने शरीर या अन्य किसी भी वस्तु को जितना चाहे भारी करने की सिद्धि।

(5) प्राप्ति सिद्धि - जो भी चाहे प्राप्त करने की सिद्धि।

(6) वशीत्व सिद्धि- किसी भी वस्तु को वश करके अपने नियंत्रण में लाने की सिद्धि।

(7) प्राकम्य सिद्धि- विराट इच्छाशक्ति के बल पर सब इच्छाओं को तृप्त करने की सिद्धि।

(8) ईशित्व सिद्धि - सबका ईश बनने की सिद्धि।

क्रियायोग ध्यान से निराकार परमब्रह्म की अनुभूति मे लीन समस्त साधक